* राष्ट्रसंघ की असफलताएँ :-

यद्यपि राष्ट्रसंघ छोटे देशों के आपसी विवादों को सुलझाने में सफल रहा किंतु अंतर्राष्ट्रीय महत्व के प्रमुख विवादों को सुलझाने में राष्ट्रसंघ पूर्णतः असफल रहा। इसका मुख्य कारण यह रहा कि बड़े राष्ट्रों ने राष्ट्रसंघ के सिद्धान्तों में विश्वास का ढोंग किया और अपनी स्वार्थपूर्ण नीतियों को लगातार जारी रखा।

राष्ट्रसंघ विलना विवाद (1920-21), इटली और यूनान के मध्य का कोर्फू विवाद, ग्रान्चाको विवाद (1928-33) मंचूरिया विवाद (1931-32ई.), स्पेन का गृह युद्ध, चीन-जापान युद्ध (1937-45ई.), रूसी-फिनिश युद्ध (1939-40ई.) इत्यादि विवादों को सुलझाने में असफल रहा।

* राष्ट्रसंघ की असफलता के कारण :-

- राष्ट्रसंघ के सिद्धान्तों में बड़े राष्ट्रों की निष्ठा का अभाव।
- उग्र राष्ट्रवाद
- वैश्विक आर्थिक संकट
- वैश्विक सेना का न होना।
- निरंकुश शासन का उदय → इटली, जर्मनी, स्पेन, पुर्तगाल
- मध्यशक्तियों का असहयोग

निष्कर्षतः :-

सदस्य राष्ट्रों के असहयोग के कारण राष्ट्रसंघ विश्व शान्ति, सुरक्षा एवं न्याय के अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल नहीं हो सका। तथापि संघ ऐतिहासिक महत्व की एक

मध्यन संस्था के रूप में उभरकर सामने आया। इसने वैश्विक शान्ति, सुरक्षा तथा न्याय की दिशा में संपूर्ण संसार को सोचने के लिए बाध्य किया। वाल्टर के शब्दों में "संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों, सिद्धान्तों, संस्थाओं और पद्धतियों पर तथा इसकी प्रत्येक बात पर राष्ट्रसंघ की स्पष्ट छाप है।" संक्षेप में वर्तमान संयुक्त राष्ट्रसंघ के निर्माण में राष्ट्रसंघ ने बुनियादी भूमिका निभाई।